स्वच्छ मिथिला! स्वस्थ्य मिथिला!!

12 अक्टुबर 2019 ई.

महात्मा गाँधीजीक 150म् जयंती पखबारा

(बापू चम्पारण सत्याग्रह शताब्दी)

डोम (महादलित) टोल भपटियाहीसँ गाँधी चौक बसुआरी धरि; घोघरडीहा पूर्वी मण्डल भाजपा कार्यकर्त्ता'क

स्वच्छता पदयात्रा

पंचनिष्ठ

1. राष्ट्रीय एकात्मता
2. विधायी सम्प्रदाय निर्पेक्षता
3. नैतिक मूल्यपर आधारित राजनीति
4. लोकतन्त्र
5. गाँधीवादी समाजवादकेँ मानब

लालदेव कामत

कार्यक्रम प्रमुख

चलभाष सं. 7631390761

Scanned with OKEN Scanner

स्वच्छता-पदयात्रा

Scanned with OKEN Scanner

महात्मा गाँधीजीक 150म् जयंती परखबारा

स्वच्छता पदयात्रा

लालदेव कामत

पल्लवी प्रकाशन

बेरमा/निर्मली

Scanned with OKEN Scanner

ISBN : 978-93-88811-35-4
दाम : 20/- (भा. रू.)
सर्वाधिकार © श्री लालदेव कामत
पहिल संस्करण : 2019

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली,
जिला- सुपौल, बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल) बिहार : 847452

SWACHATA PADYATRA
Collection of Reminiscences by Shri. Laldeo Kamat

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। काँपीराइट धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉडिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

Scanned with OKEN Scanner

विनम्र निवेदन

सुचिताक दर्शन कएनिहार अथबा स्वच्छताक काजकेँ गति प्रदान करय मे अगुआएल सभ कियोकेँ बुझल अछि देशक प्रधानमंत्री मा. नरेन्द्र मोदीजीक आह्वानपर भारत सिंगल यूज प्लास्टिसँ त्राण पाबए लेल त्वरित गतिये काज कए रहलैक अछि। जाहि तरहेँ हम सभ गाछक कमीसँ पर्यावरण केर दुष्परिणामकेँ भोगैत रहलहुँ, तहि तरहेँ जल-जंगल आ जमीन पलास्टिक, पन्नीसँ मुक्त होअय। ई काज आम नागरिकक दायित्व बनय, से बोध कराबय लेल भाजपाक जत्था गामे-गाम अभियान चलाय 2 अक्टुबर- गाँधी जयन्तीक अवसरपर संकल्प लैत सूचना संचार करयमे स्वयं स्वच्छता यात्रा कए अनुकरण करय लेल जन-जनकेँ उत्प्रेरित करैत अछि। एहि पाँतिक हस्ताक्षर अपन उपस्थितिसँ बापूधाम- मोतिहारी रेलबे स्टेशन आ ओतयके अन्य दसठामक स्वच्छता कार्यक्रममे सहभागिता दैत शोसल मीडियापर ओतुक्का पाँच दर्जनसँ बेसी रंगीन फोटोक संग झांखी सहित वकतव्य जारी कयल।

अस्तु, साग्रह अनुरोध करइ छी अपना परिवेशमे केतौ पाउच, कप प्लेट, बोतल, चम्मच्छ इत्यादि जे पॉलिथिन आ थर्मोकोलसँ बनल, उपयोग करैसँ जहिना सिकिम्म राज्य परहेज

भेल, तकर सेहन्ता भारत केर सभ राज्यक निवासीकेँ होएबाक चाही। एहिसँ शस्य शामला भारत भूमिक उर्वरा शक्ति बढ़त आ बंजर होइसँ बाँचत। एहि सफलतामे सबहक सतत् अपेक्षा रखइ छी।

सधन्यवाद

अपनेक कनिष्ठ सेवक

लालदेव कामत (पूर्व उम्मीदवार)

बीजेपी.क्रम 104343/1991-93

मो. 9693504432

ई-मेल : lalkamatdeo@gmail.com

हटनी (नौआबाखर)

02 अक्टुबर 2019

साबरमतीक सन्तसँ सीखू 10 गूर

1. नेतृत्व : बापूक नेतृत्व सिद्धांत आ व्यवहारमे एकरूपता रहय, संगहि विचार आ काजमे समानता सेहो।

2. ग्रामीण विकास प्रवन्धन : गाँधीक आश्रममे भोजनसँ लऽ कऽ वस्त्र धरि तैयार होइत रहैक, इयह देहाती विकास लेल ओ एकटा मॉडल केर ओकालत कएलैन।

3. नैतिक रणनीति : बापूक आन्दोलन आ रणनीतिक पाछाँ नैतिकता पैघ तागत छलैक, ओ जनै छला नैतिक मूल्ये सँ जीत हाँसिल कए सकैत छी।

4. पारदर्शिता : बापू दृढ़ छथि संगठनक प्रति निजि आ सार्वजनिक जीवनमे सभकेँ शुचिता पारदर्शिता राखब परम जरूरी छइ।

5. ब्राण्ड खादी : स्वदेशी आन्दोलन करयमे विदेशी वस्त्रक वहिष्कार करब मात्रे नहि अपितु रचखाक काटल सूतसँ बनल खादी वस्त्रकेँ बाण्ड बनौलनि।

6. संचार कौशल : ओ संचार कौशलमे मजगूत रहलाह, तेँ अंग्रेज आ भारतीयक बीच अपन गप्प निठाहे बुझा सकलाह।

7. जन सम्पर्क प्रवंधन : गाँधीकेँ ईहो बुझल रहैन जे जनमानस कोना एकशिरेसँ आगू बढ़त। हुनकर दांडी मार्च लोक

सम्पर्क प्रबंधन केर बेमिशाल उदाहरण अछि।

8. समावेशन : समन्यवय केर आधारपर वंचितक विकास लेल सहभागिता व्यवस्थित करीलनि आ पूंजीवाद-साम्यवादक मध्य तटस्थ छलाह।

9. भावनात्मक बुद्धिमता : गाँधीजी अपन भावनाक संग अगिलोके भाव नीक जकाँ समझैत कहियो तमसा कए नाकारात्मक नै मानलथि।

10. समय प्रवन्धन : गाँधी कहियो नै कहलखिन जे हम व्यस्त छी, से हुनक समय प्रवन्धन केर देन मानल जाइछ।

स्रोत : प्रो. आई.आई.एम. लखनऊ

सधन्यवाद आभार...

एकादश व्रत

1. सत्य : सत्ये परमेश्वर छी, साँच आग्रह, साँच विचार, सच कर्म आदि ई सभ एहिक अंग छी। जेतय साँच छैक, ओतय शुद्ध ज्ञान छैक, तेतय आनन्दे आनन्द अछि।

2. अहिंसा : साँच छी परमेश्वर। एहिक साक्षात्कारक मार्ग एक आ एक साधन-अहिंसा छी।

3. ब्रह्मचर्य : ब्रह्मचर्यक शाब्दिक अर्थ भेल परब्रह्म केर, साँच केर खोजीमे चर्या अथबा ताहिसँ सम्बन्ध रख्यबला आचार। तेकर मूल अर्थमे सर्वेन्द्रीय संयम विशेष अर्थ निकलैत छैक। मात्र जननेन्द्रिय संयमक अधूरा अर्थकेँ बिसैर जाऊ।

अस्वाद : जाधरि मानव जी केर स्वादपर नहि जीतत ताबत ब्रह्मचर्यक पालन कठिनाह रहत। भोजन मात्र पोषण लेल होय, सुआद वा भोग खातिर नहि।

5. अस्तेय : दोसरक चीज वौस्तकेँ बिनु पुछनहि लेब चोरी थिक, परञ्च मानवकेँ अपना कम-सँ-कम आवश्यकतासँ फाजील लेबाक प्रवृत्ति वा संग्रह करब चोरिये छी।

6. अपरिग्रह : सचमुचमे सुधारक निशानी परिग्रह वृद्धि नहि जे कि विचार आ इच्छापूर्वक परिग्रह कम करब ओकर उदाहरण होयत। जहने परिग्रह घटत तँ सुख आ सुच्चा संतोख बढ़त, तँए

सेवा शक्ति बढ़ैत छैक।

7. अभय : जे सत्य परायण रहय चाहैथ, से नहि तँ अपन जाति विरादरीसँ डरय आ नै सरकारसँ, नै चोर-डकैतसँ डरय आ ने बेमारी वा मृत्युसँ डरय, केकरो बुरा माननेसँ सेहो नहि भयभीत होअए।

8. अस्पृश्यता निवारण : छुआछूत हिन्दूधर्मक अंग नहि भऽ सकैछ, तेतबे नहि, निठाहे ओहिमे पैसल सड़ैन छी, मनक वहम आ पाप छी, तँ एहिक निवारण करब हरेक मानव केर कर्तव्य छी, धर्म छी।

9. शरीर श्रम : जिनक देह काज करयमे सक्षम छैक ताहि स्त्री-पुरुखकेँ अपन नित्य कर्म जे स्वयं करय लायक होय, से स्वत: करक चाही। बिनु कारणें आनसँ सेवा नहि लेबक चाही। आ जे खुद मेहनत नहि करय, तेकरा खेयबाक कोनोटा हक नहि।

10. सर्वधर्म समभाव : जतेक प्रतिष्ठा हम अपना धरमकेँ करैत छी, ततबेक इज्जत दोसरोक धर्मकेँ करबाक चाही। जेतय एहेन वृत्ति छैक ओतय एक-दोसरसँ धार्मिक अपराध नहि होयत आ ने परधर्मीकिँ अपना धर्ममे आनि मिज्झर करबाक कोशीश हुअए। हरदम प्रार्थना ई हुअए जे सभ धरममे विद्यमान दोष दूर होअए।

11. स्वदेशी : अपना लगपासमे रहयबला केर सेवामे तल्लीन रहब देशी धरम भेल। जे कियो सन्निकट वालाक सेवा छोड़ि अन्तय दूर जा कए सेवा दैत दौड़ लगबैत अछि से स्वदेशीकेँ भंग करैत अछि।

Scanned with OKEN Scanner

बिसरल बात

विगत 19 सँ 21 सितम्बर 1992 कैं बर्धा (महाराष्ट्र) केर मांगनबाड़ीमे डॉ. जे.सी. कुमारप्पा शताब्दी समितिक तत्वावधानमे स्व. कुमारप्पा गाँधीवादी अर्थशास्त्री केर मित्र सहकर्मी तथा हुनकर जीवन दर्शनमे श्रधा रखैबला करीब 200 सँ बेसी लोकक मित्र-मिलन कार्यक्रम भेल रहैक। एहिमे शुश्री निर्मलादेशपाण्डेक अध्यक्षतामे एहि पाँतिक लेखक केर सहभागिता भेल रहय। जाहिमे शाश्वत अर्थ व्यवस्थाक दृष्टिये व्यक्तिगत जिनगीमे आचरण, रचनात्मक संस्थाक भूमिका, राष्ट्रीय समस्याक समाधान लेल कृषि, खादी ग्रामोद्योग आ गोपालन-गोरक्षणक योगदान आओर राष्ट्रक अर्थनीतिकें गाँधी-कुमारप्पाक विचार दिस मोरैक हेतु कोन तरहें डेग उठावोल जाइ ताहि विषयपर विचार विमर्श भेल छलैक।

लोकजीवनमे श्री कुमारप्पाजीक विचारकें सुप्रतिष्ठित करक लेल संयम, सादगी स्वाबलंबन आ स्वदेशीक जीवन मूल्यकें रोजके व्यवहार आ आचरणमे आनय पड़त। तखने नव युवा पीढ़ी आ समस्त समाजमे नव प्रेरणा आ उत्साहक संचार कयल जा सकैत अछि। तत्कालिन सरकारमे गाँधी, बिनोबा, कुमारप्पा केर सेवा संस्थान संगठनकें समर्पित सेवकक रचनात्मक प्रवृत्तिक उपेक्षा कए देशमे यंत्रीकरण पूंजी आ ऊर्जा, केन्द्रीत उद्योगकें प्रोत्साहित करैत

Scanned with OKEN Scanner

ओहीक अमर्यादित विकास कयल। आ विदेशी औद्योगिक व्यापारिक प्रतिष्ठान सभकेँ भारतमे निर्वन्ध रूपे काज करबा ले सबटा दरबज्जा फोलि देलक। परिणाम स्वरूप विश्वमे आ अपना देशमे सेहो बेरोजगारी बढ़ल, विषमता बढ़ल आ गामसँ शहर दिस लोकक पालायन बढ़ल। संगहि शोषण आ सामाजिक अन्याय बढ़ल। एहिसँ हिंसा, अशान्ति, अलगाववाद आ समाज विघटन केर समस्या उत्पन्न भेलैक।

वर्त्तमान केन्द्रीय सरकार नीतिमे परिवर्त्तन केर जरूरत बुझल आ नीतिगत निर्णयसँ देश आगू बढ़ि रहलैक अछि। तीन तलाक आ जम्मू काश्मिर समस्या निदान देखाय पड़ल। एन.डी.ए. सरकारक बहुतोरास उपलब्धि सबहक नजैरमे आबि रहल छैक। वृहत कार्य योजनाक असैर आगू समयमे देखाय पड़त।

(टिप.- लेखक गाँधीजीक सेवाग्राम आ विनोबाजीक पवनार तथा नागपुरक यात्रा कय चुकल छथि।)

बापू के प्रिय भजन (गुजराती)

वैष्णव जन तो तेने कहीये, जे पीड़ पराई जाणे रे;
परदु:खे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे।
सकल लोकमां सहुने वंदे, निन्दा न करे केनी रे;
वाच काछ मन निश्छल राखे, धन-धन जननी तेनी रे।
सम दृष्टि ने तृष्णा त्यागी, परस्त्री जेने मात रे;
जिह्वा थकी असत्य न बोले, परधन नव झाले हाथ रे।
मोह माया व्यापे नहि जेने, दृढ़ वैराग्य जेना मनमा रे;
रामनामशु ताली लागी, सकल तीरथ तेना तनमा रे।
वणलोभी ने कपट रहित छे, काम क्रोध निवार्या रे;
भणे नरसैंयों तेनु दरसन करतां कुल एकोतेर तार्या रे।

(गाँधीक डायरीसँ साभार...)

Scanned with OKEN Scanner